कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इंडिया, वाराणसी द्वारा प्रकाशित कृष्णमूर्ति साहित्य

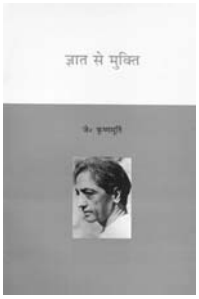

ज्ञात से मुक्ति : सन् 1969 में प्रकाशित होने के साथ ही 'फ्रीडम फोम द नोन' को कृष्णमूर्ति की शिक्षा को समझने की दिशा में प्रारम्भिक और महत्त्वपूर्ण पुस्तक की मान्यता मिल गई थी। मानवीय त्रासदी और जीवन की अनन्त समस्याओं पर कृष्णमूर्ति ने जो कुछ कहा है उसका सार रूप में पहली बार संकलन मॅरी लट्यन्स द्वारा इस पुस्तक में किया गया था। स्वयं कृष्णमूर्ति ने उनसे इस पुस्तक को तैयार करने के लिए कहा था और इसका शीर्षक भी उन्होंने सुझाया था। यह पुस्तक बंगला में भी उपलब्ध है।

पृष्ठ संख्या : 156

हिंसा से परे : कृष्णमूर्ति कहते हैं, ''जब तक किसी भी रूप में 'मैं' का अस्तित्व है – स्थूल रूप में या अत्यन्त सूक्ष्म रूप में – तब तक हिंसा मौजूद रहेगी।'' सन् 1973 में प्रकाशित 'बियोंड वॉयलंस' का यह हिन्दी अनुवाद मानवीय जीवन से सम्बन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण और बुनियादी विषयों को समेटता है, जैसे अस्तित्व, भय, हिंसा, आन्तरिक क्रान्ति, मुक्ति, ध्यान आदि। यह पुस्तक बंगला में भी उपलब्ध है।

पृष्ठ संख्या : 160

गरुड़ की उड़ान : ''गरुड़ अपनी उड़ान में कोई भी चिह्न नहीं छोड़ता, जबकि वैज्ञानिक छोड़ता है। स्वतंत्रता के प्रश्न को गहराई से समझने के लिए दोनों जरूरी हैं – एक ओर वैज्ञानिक परीक्षण तथा दूसरी ओर गरुड़ की उड़ान– एक ऐसी उड़ान जो अपने पीछे कोई चिह्न न छोड़े।'' सन् 1971 में 'द फ्लाइट ऑफ द ईगल' के नाम से प्रकाशित इस पुस्तक में तमाम महत्त्वपूर्ण विषयों के साथ इन प्रश्नों को भी उठाया गया है, जैसे–'क्या मानव बदल सकता है?', 'हम शान्ति की अवस्था में क्यों नहीं जी सकते?' आदि।

पृष्ठ संख्या : 164

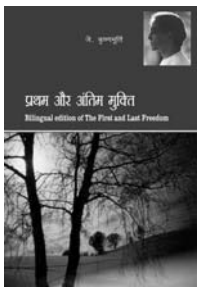

प्रथम और अन्तिम मुक्ति (सजिल्द द्विभाषी संस्करण) : सन् 1954 में 'द फर्स्ट एंड लास्ट फ्रीडम' के नाम से प्रकाशित कृष्णमूर्ति की यह कृति उनकी सर्वाधिक चर्चित पुस्तकों में से एक है। इस पुस्तक की प्रस्तावना में प्रसिद्ध दार्शनिक ऑल्डस हक्सले ने लिखा था– 'कृष्णमूर्ति के लेखन और रिकॉर्ड की गयी वार्ताओं में से चुने गये अंशों पर आधारित इस पुस्तक में पाठकों को मूलभूत मानवीय समस्याओं से सम्बन्धित एक स्पष्ट और अद्यतन दृष्टिकोण मिलेगा, और साथ ही इसका समाधान जिस मात्र एक तरीके से हो सकता है, अर्थात् स्वयं के लिए और स्वयं के द्वारा, उसका एक निमंत्रण मिलेगा।''

पुस्तक का यह विशेष द्विभाषी (अंग्रेजी–हिन्दी) संस्करण है जिसमें बायीं तरफ मूल अंग्रेजी पाठ दिया गया है और उसके साथ ही साथ दायीं तरफ हिन्दी अनुवाद है।

पृष्ठ संख्या : 575

आमूल क्रान्ति की आवश्यकता : कृष्णमूर्ति की एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक 'अर्जेन्सी ऑफ चेंज' का यह हिंदी रूपांतरण है। इस पुस्तक में कई संवेदनशील विषयों पर मंथन किया गया है, जैसे 'क्या ईश्वर है?', 'इस संसार में कैसे जीएं,', 'सम्बन्ध', 'आत्महत्या', 'प्रेम और काम' आदि।

पृष्ठ संख्या : 153

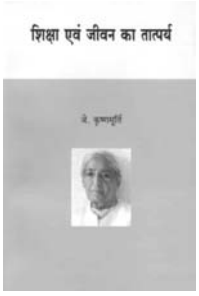

शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य : जीवन में शिक्षा के व्यापक अर्थ और महत्त्व पर प्रकाश डालती हुई यह पुस्तक हमारे सामने एक गंभीर चुनौती रखती है : ''हम शिक्षक ही यदि स्वयं को गहराई से नहीं समझते तथा बच्चे के साथ अपने रिश्ते को ही मौलिक रूप से नहीं समझते, और उसे केवल जानकारियों से भरने एवं परीक्षाएं पास करवाने में लगे रहते हैं तो हम कैसे एक नये ढंग की शिक्षा ला सकेंगे?यदि मार्गदर्शक स्वयं ही भ्रांत हो, संकीर्ण हो, राष्ट्रवादी तथा मतांध हो तो स्वाभाविक है कि उसका शिष्य भी वैसा ही होगा। सबसे पहले स्वयं को नये सिरे से शिक्षित करने की चिंता

करना बच्चे के भविष्य के कल्याण और उसकी सुरक्षा की चिंता से कहीं अधिक ज़रूरी है।'' यह पुस्तक बंगला और उर्दू भाषाओं में भी उपलब्ध है।
पृष्ठ संख्या : 100

वाशिंगटन वार्ताएं : अनेक वर्षों तक कृष्णमूर्ति की अमेरिका के विभिन्न स्थानों पर वार्ताएं होती रहीं, लेकिन वहां की राजधानी वाशिंगटन में उनकी कोई वार्ता नहीं हुई थी। अप्रैल 1985 में जब वे वहां बोलने के लिए सहमत हुए तो उनकी आयु नब्बे वर्ष की थी। अपने जीवन के परम शिखर से बोलते हुए उन्होंने दो दिन में अपनी शिक्षा के प्रत्येक पहलू को समेटते हुए सार रूप में सामने रख दिया।
पृष्ठ संख्या : 52

शिक्षा संवाद : 'कृष्णमूर्ति ऑन एजुकेशन' के नाम से प्रसिद्ध पुस्तक का यह हिन्दी रूपांतरण है। यह पुस्तक दो खंडों में बंटी है – पहले खंड में विद्यार्थियों के साथ कृष्णमूर्ति की वार्ताएं हैं और दूसरे खंड में शिक्षकों के साथ।
पृष्ठ संख्या : 144

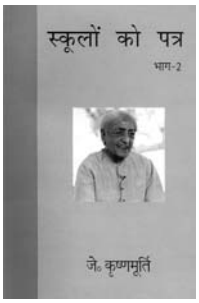

स्कूलों के नाम पत्र, भाग-1 एवं स्कूलों को पत्र, भाग-2 : बच्चों की सम्यक शिक्षा में कृष्णमूर्ति की गहरी रुचि थी। बच्चों के सहज प्रस्फुटन की दृष्टि से उन्होंने भारत और विदेशों में विद्यालयों की स्थापना की। समय-समय पर वे इन विद्यालयों को पत्र लिखते रहते थे जिनमें वे विद्यालय, शिक्षक, बच्चे, माता-पिता और शिक्षा से जुड़े हर संभावित प्रश्न पर विस्तार से प्रकाश डालते थे।
भाग-1 : पृष्ठ संख्या 114
भाग-2 : पृष्ठ संख्या 72

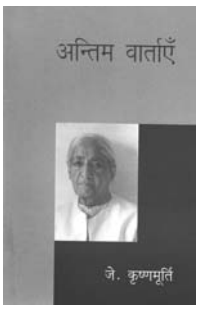

अन्तिम वार्ताएं : सन् 1985 के नवंबर माह में कृष्णमूर्ति इक्यानवे साल की अवस्था में भारत आए। भारत में उनका यह अन्तिम दौरा था क्योंकि चार माह बाद फरवरी 1986 में उनका ओहाय, कैलीफोर्निया में देहान्त हो गया। भारत में दी गई अन्तिम वार्ताओं का यह संकलन है। इसमें राजघाट, वाराणसी में बौद्धों के साथ परिचर्चाएं और सार्वजनिक वार्ताएं भी संकलित हैं। इसके अतिरिक्त इसमें ऋषिवैली स्कूल के शिक्षकों के साथ संवाद और मद्रास में दी गयीं सार्वजनिक वार्ताएं शामिल हैं।
पृष्ठ संख्या : 112

संस्कृति का प्रश्न : इस पुस्तक में कृष्णमूर्ति की विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों से हुई वार्ताएं संकलित हैं। एक ओर इसमें विद्यार्थियों के ऐसे सीधे प्रश्न संकलित हैं जैसे 'मनुष्य लड़ते क्यों हैं?', 'पढ़ना क्यों जरूरी है?' आदि, वहीं दूसरी ओर ऐसे गम्भीर प्रश्न भी हैं जैसे 'क्या मनुष्य केवल मन और मस्तिष्क ही है, अथवा इससे कुछ अधिक भी?' तथा 'वास्तविक जीवन क्या है?' आदि।

पृष्ठ संख्या : 244

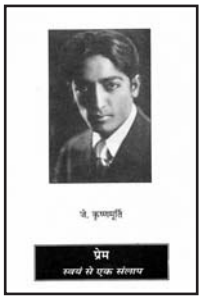

प्रेम - स्वयं से एक संलाप : मनुष्य के आपसी सम्बन्धों में आने वाली कठिनाइयों और चुनौतियों की यह एक सारगर्भित व्याख्या है। यह पुस्तक विलक्षण शैली में है और ऐसा लगता है जैसे कृष्णमूर्ति स्वयं को ही सम्बोधित कर रहे हैं। ऐसा करते हुए वे बड़ी गहराई और सूक्ष्मता के साथ हमें अपने भीतर की यात्रा पर ले जाते हैं।

पृष्ठ संख्या : 12

सत्य एक पथहीन भूमि है : इस ऐतिहासिक वक्तव्य के साथ जे. कृष्णमूर्ति ने 'ऑर्ड ऑफ द स्टार' नाम के उस विशाल संगठन को भंग कर दिया था जिसके वे प्रधान थे और 'वर्ल्ड टीचर' के रूप में प्रतिष्ठित थे। 3 अगस्त 1929 में हॉलैण्ड में दिया गया यह संभाषण अपने आप में अनूठा है और सत्य के अन्वेषकों के लिए एक कालातीत चुनौती प्रस्तुत करता है।

पृष्ठ संख्या : 13

जीवन की पुस्तक : कृष्णमूर्ति द्वारा सन् 1980 में दी गयी श्रीलंका वार्ता से यह पुस्तिका संकलित है। जीवन के विस्तृत फलक को तो इसमें समेटा ही गया है, साथ ही इसकी सिलसिलेवार रूप में प्रस्तुति भी विशिष्ट और मौलिक है। समूचे जीवन को कृष्णमूर्ति एक पुस्तक के रूप में सामने रखते हैं और अध्याय-दर-अध्याय उस जीवन रूपी पुस्तक को खोलते जाते हैं। यह पुस्तिका उर्दू में भी उपलब्ध है।

पृष्ठ संख्या : 15

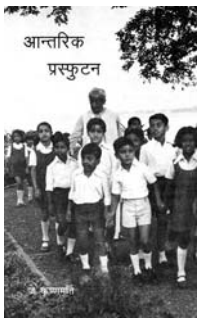

आन्तरिक प्रस्फुटन : इंग्लैण्ड का 'ब्रॉकवुड पार्क' स्कूल अध्यापकों और वयस्क विद्यार्थियों का एक छोटा-सा समुदाय है जिसे कृष्णमूर्ति ने एक ऐसे परिवेश के निर्माण के लिए स्थापित किया था जहां अध्यापक-विद्यार्थी मिलकर जीवन के मौलिक प्रश्नों की छानबीन कर सकें और आन्तरिक रूप से प्रस्फुटित हो सकें। सन् 1976 में वहां के अध्यापकों और विद्यार्थियों के साथ हुए एक वार्तालाप का संकलन इस पुस्तिका में किया गया है। यह बंगला में भी उपलब्ध है।
हिन्दी अनुवाद पृष्ठ संख्या : 28

स्वतंत्रता, उत्तरदायित्व एवं अनुशासन : सन् 1980 में 'ऋषिवैली' स्कूल के विद्यार्थियों के साथ हुई बातचीत का यह संकलन है। विद्यार्थियों के साथ बड़ी सावधानी से कृष्णमूर्ति स्वतंत्रता, उत्तरदायित्व एवं अनुशासन के गहरे अर्थों में जाते हैं और इनके आपसी सम्बन्धों को दर्शाते हैं।
पृष्ठ संख्या : 22

ध्यान में मनः ध्यान के सम्बन्ध में कृष्णमूर्ति के दृष्टिकोण का सुन्दर परिचय इस पुस्तिका में मिलता है। ध्यान की पारम्परिक मान्यता को नकारते हुए वे कहते हैं कि जब तक हमारे दैनिक जीवन और कार्यों में व्यवस्था नहीं आती है तब तक हमारे पास ध्यान का कोई आधार नहीं होगा।
पृष्ठ संख्या : 16

विज्ञान और सृजनशीलता : मार्च 1984 में अमेरिका के राष्ट्रीय प्रयोगशाला अनुसंधान केन्द्र, लॉस ऐलामोस में 'विज्ञान और सृजनशीलता' विषय पर आयोजित विचार-गोष्ठी में बोलने के लिए कृष्णमूर्ति को आमंत्रित किया गया था। उसी वार्ता का संकलन इस पुस्तिका में किया गया है।
पृष्ठ संख्या : 16

परम्परा जिसने अपनी आत्मा खो दी है : सन् 1928 में बम्बई के फ्री प्रेस जर्नल के प्रतिनिधि की कृष्णमूर्ति से हुई वार्ता का यह संक्षिप्त विवरण है। चर्चा का विषय था 'भारत की स्थिति'।
पृष्ठ संख्या : 8

सुखी वही जो कुछ नहीं है : सन् 1948 से लेकर सन् 1960 तक कृष्णमूर्ति लोगों के लिए आसानी से उपलब्ध थे और इस दौरान अनेक लोग उनके सम्पर्क में आये। व्यक्तिगत मुलाकातों तथा चिट्ठी-पत्री में सम्बन्ध खिलते गये। इस दौरान लिखे उनके कुछ मर्मस्पर्शी पत्र इस पुस्तिका में संकलित हैं।

पृष्ठ संख्या : 52

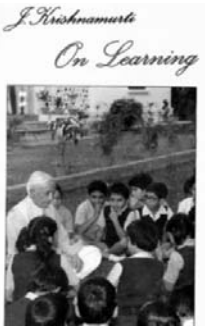

On Learning / **सीखने की कला :** कृष्णमूर्ति की एक अहम पुस्तक 'लाइफ अहेड' की प्रस्तावना का यह हिन्दी रूपांतरण है। कृष्णमूर्ति के अनुसार सम्यक शिक्षा और समग्र विकास में सीखने की प्रक्रिया सर्वाधिक महत्त्व की है। इस संपूर्ण प्रक्रिया की गहरी छानबीन इस पुस्तिका में की गयी है। इसका हिंदी अनुवाद 'सीखने की कला' के नाम से छापा गया है। यह पुस्तिका उर्दू में भी उपलब्ध है।

'ऑन लर्निंग', पृष्ठ संख्या : 34

सीखने की कला, पृष्ठ संख्या : 32

Talks with Students, Varanasi 1954 : कृष्णमूर्ति की विद्यार्थियों के साथ वार्ताओं में एक अनूठी सरलता, तन्मयता और प्रज्ञा देखने को मिलती है। राजघाट, वाराणसी के विद्यार्थियों के साथ हुई ये वार्ताएं जीवन के लगभग हर पहलू को स्पर्श करती हैं और विद्यार्थियों के हर तरह के प्रश्न की विवेचना करती हैं, जैसे 'सच्चा प्रेम क्या है?', 'क्या किसी चीज की नकल करना उचित है?', 'आलस्य से हम कैसे बच सकते हैं?', 'आदर्श विद्यार्थी के क्या गुण हैं?', 'मैं ईश्वर को कैसे पा सकता हूं?', 'हम दुख में रोते क्यों हैं और खुशी में हंसते क्यों हैं?', 'हम अपने दुर्गुणों को हमेशा के लिए कैसे मिटा सकते हैं?' आदि आदि।

पुस्तक के अन्त में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में जनवरी सन् 1954 में हुई तीन वार्ताएं भी संकलित हैं। हिन्दी में यह पुस्तक 'शिक्षा क्या है?' नाम से राजपाल एंड संज़ द्वारा प्रकाशित की गयी है।

पृष्ठ संख्या : 204

सर्व सेवा संघ, वाराणसी द्वारा प्रकाशित
कृष्णमूर्ति साहित्य

जीवन भाष्य : खंड 1, खंड 2, खंड 3 : जीवन के विस्तृत फलक को समेटती हुई कृष्णमूर्ति की यह अद्‌भुत पुस्तक शृंखला है। इनमें जीवन का हर पहलू आ जाता है। इसका गद्य पद्य का सा आभास देता है। प्रत्येक अध्याय प्रकृति के वर्णन से आरम्भ होता है। इसके बाद अज्ञात व्यक्तियों या उनके समूह का चित्रण होता है जो कि कृष्णमूर्ति के पास तमाम समस्याओं से जूझते हुए आते हैं, और मानव कल्याण, सामाजिक न्याय एवं संबोधि की तलाश करते हैं। इनके साथ जो संवाद होता है वह पाठकों के सम्मुख एक दर्पण का कार्य करता है।
खंड–1 पृष्ठ संख्या 314, खंड–2 पृष्ठ संख्या 296,
खंड–3 पृष्ठ संख्या 343

बच्चों के मित्र : जे. कृष्णमूर्ति : इस पुस्तक में लेखिका इन्दु टिकेकर द्वारा कृष्णजी के जीवन को संक्षेप में तथा सरल एवं सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है ताकि सभी उम्र के पाठक इसे पढ़ सकें।
पृष्ठ संख्या : 52

जे. कृष्णमूर्ति : जीवन और दर्शन : कृष्णमूर्ति के जीवन और दर्शन को सार रूप में रेखांकित करती है। इस पुस्तिका का संकलन–लेखन भी इन्दु टिकेकर द्वारा किया गया है।
पृष्ठ संख्या : 104

राजपाल एंड संज़, दिल्ली द्वारा प्रकाशित
कृष्णमूर्ति साहित्य

ईश्वर क्या है? : यह कृष्णमूर्ति की लोकप्रिय पुस्तकों में से एक है। यह पुस्तक उस परम पावन की हमारी खोज को केंद्र में रखती है। कठिनाइयों, विपत्तियों, दुख, कष्ट और असमंजस से घिरा व्यक्ति जब आस्था की ओर लौटता है तो मार्गदर्शन और सहायता के लिए किसी परम सत्ता की खोज करता है। यहीं से उसके भीतर प्रश्न उठने लगते हैं कि 'मैं क्या हूं'– 'ईश्वर क्या है?'
पृष्ठ संख्या : 152, मूल्य : 125 रुपये

शिक्षा क्या है? : क्या आप स्वयं से यह नहीं पूछते कि आप क्यों पढ़-लिख रहे हैं? आपको क्यों शिक्षा दी जा रही है? और जो शिक्षा दी जा रही है उसका क्या अर्थ है? इस पुस्तक में जीवन से संबंधित युवा मन के अंदर से निकले अनछुए-अनबूझे प्रश्न हैं और उन पर कृष्णमूर्ति की सरल अंतर्दृष्टियां हैं। ये प्रश्न शिक्षा के बारे में हैं, मन के बारे में हैं, और तमाम आश्चर्यचकित कर देने वाले विषयों के बारे में हैं, लेकिन सभी एक दूसरे से जुड़े हैं।
पृष्ठ संख्या : 230, मूल्य : 175 रुपये

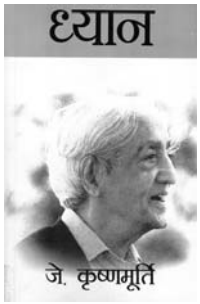

ध्यान : कृष्णमूर्ति की वार्ताओं तथा लेखन से संकलित संक्षिप्त उद्धरणों का यह क्लासिक संकलन ध्यान के बारे में उनकी अंतर्दृष्टियों का सार प्रस्तुत करता है। एक जगह वह कहते हैं : 'ध्यान जीवन की महानतम कलाओं में से एक है... यह कला संभवतः दूसरे से नहीं सीखी जा सकती, और यही इसका सौंदर्य है... जब आप स्वयं का निरीक्षण करते हुए अपने बारे में सीखते हैं, अर्थात किस तरह आप खाते-पीते हैं, किस ढंग से आप चलते-फिरते हैं, क्या बातचीत और गपशप करते हैं, आपका ईर्ष्या करना, नफरत करना – जब आप अपने भीतर और बाहर की इन सारी चीज़ों के प्रति सजग और सचेत होते हैं, बिना किसी काट-छांट के, तो यह ध्यान का ही अंग है।'
पृष्ठ संख्या : 154, मूल्य : 125 रुपये

आपको अपने जीवन में क्या करना है? : यह पुस्तक विशेषकर युवा वर्ग को शिक्षा तथा जीवन के विषय में कृष्णमूर्ति की विशद दृष्टि का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध ढंग से परिचय कराती है। दैनंदिन जीवन से जुड़े ज्वलंत प्रश्नों का गहन अन्वेषण इस पुस्तक में मिलता है : ''जब आप असाधारण रूप से सुंदर ऐसा कुछ देखें जो जीवन और सौंदर्य से परिपूर्ण हो तब आप विचार को कभी न आने दें, क्योंकि ज्यों ही विचार उसे स्पर्श करेगा त्यों ही पुरातन होने के कारण वह इसे मनोसुख में बदल देगा, और तब इस सुख की मांग उठने लगेगी– अधिक और अधिक मात्रा में। और जब वह प्राप्त नहीं हो सकेगा तब द्वंद्वकूद पड़ेगा, भय आ डटेगा...''

पृष्ठ संख्या : 220, मूल्य : 175 रुपये

राजपाल एंड संज़ द्वारा कृष्णमूर्ति की निम्नलिखित पुस्तकों का भी वितरण किया जा रहा है :

1. हिंसा से परे
2. संस्कृति का प्रश्न
3. आमूल क्रांति की आवश्यकता
4. प्रथम और अंतिम मुक्ति (द्विभाषी संस्करण)

पुस्तकें मंगाने के लिए इस पते पर संपर्क करें :

राजपाल एंड संज़,
मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली–6
फोन : 011–23966602
ईमेल : mail@rajpalsons.com

नयी हिंदी डी.वी.डी.

कृष्णमूर्ति : बुनियादी बदलाव – एक चुनौती

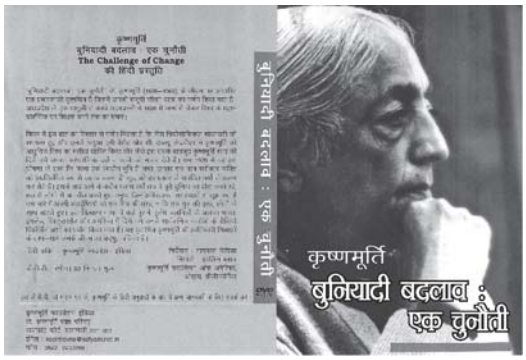

जे. कृष्णमूर्ति के जीवन एवं दर्शन पर आधारित डॉक्यूमेंट्री फिल्म *The Challenge of Change* की यह हिंदी में प्रस्तुति है। इसमें उनकी समूची जीवन यात्रा का वर्णन किया गया है : आंध्रप्रदेश के एक मामूली से कस्बे मदनपल्ली में 1895 में जन्म से लेकर विश्व के महान दार्शनिक एवं शिक्षक बनने तक का सफर।

फिल्म में इस बात का विस्तार से वर्णन मिलता है कि कैसे थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना हुई और उनके अगुआ एनी बेसेंट और सी. डब्ल्यू. लेडबीटर ने कृष्णमूर्ति को आधुनिक विश्व का मसीहा घोषित किया और कैसे इस सबके बावजूद कृष्णमूर्ति स्वयं को दिये गये समस्त आध्यात्मिक दर्जे व रुतबे को नकार देते हैं। सन् 1929 में वह इस घोषणा के साथ कि 'सत्य एक पथहीन भूमि है' तथा 'उनका एक मात्र सरोकार व्यक्ति को अप्रतिबंधित रूप से स्वतंत्र करना है' खुद को हर प्रकार के संगठित धर्मों से अलग कर लेते हैं। इसके बाद आगे के करीब पचास वर्षों तक वे पूरी दुनिया का दौरा करते रहे, हजारों लोगों से बातचीत करते हुए, मनुष्य जिन अस्तित्वगत समस्याओं से जूझ रहा है उस बारे में अपनी अंतर्दृष्टियों को एक मित्र की तरह, न कि एक गुरु की तरह, लोगों के साथ बांटते हुए। इस विलक्षण गाथा में कई पुराने दुर्लभ चलचित्रों के अलावा भारत, इंगलैंड, स्विट्ज़रलैंड और अमेरिका में दिये गये उनके सार्वजनिक वार्ताओं के वीडियो रिकॉर्डिंग अंशों का प्रयोग किया गया है। यह डॉक्यूमेंट्री फिल्म कृष्णमूर्ति की क्रांतिकारी शिक्षाओं के साथ-साथ उनके जीवन का अद्‌भुत परिचय है।

पुस्तक सूची

1.	ज्ञात से मुक्ति	रु. 70.00
2.	ध्यान	रु. 40.00
3.	हिंसा से परे	रु. 80.00
4.	गरुड़ की उड़ान	रु. 70.00
5.	संस्कृति का प्रश्न	रु. 100.00
6.	शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य	रु. 60.00
7.	शिक्षा संवाद	रु. 80.00
8.	स्कूलों के नाम पत्र	रु. 60.00
9.	स्कूलों को पत्र भाग-2	रु. 40.00
10.	प्रथम और अंतिम मुक्ति (सजिल्द द्विभाषी संस्करण)	रु. 500.00
11.	आमूल क्रान्ति की आवश्यकता	रु. 100.00
12.	अन्तिम वार्ताएँ	रु. 70.00
13.	मृत्यु और उसके बाद	रु. 40.00
14.	वाशिंगटन वार्ताएँ	रु. 25.00
15.	सुखी वही जो कुछ नहीं है	रु. 20.00
16.	सीखने की कला	रु. 15.00
17.	आन्तरिक प्रस्फुटन	रु. 10.00
18.	जीवन की पुस्तक	रु. 10.00
19.	प्रेम : स्वयं से एक संलाप	रु. 10.00
20.	सत्य एक पथहीन भूमि है	रु. 10.00
21.	स्वतंत्रता, उत्तरदायित्व एवं अनुशासन	रु. 10.00
22.	ध्यान में मन	रु. 10.00
23.	युद्ध और शान्ति	रु. 10.00
24.	परम्परा जिसने अपनी आत्मा खो दी है	रु. 5.00
25.	जीवन भाष्य-I	रु. 70.00
26.	जीवन भाष्य-II	रु. 70.00
27.	जीवन भाष्य-III	रु. 80.00
28.	जे. कृष्णमूर्ति जीवन और दर्शन	रु. 30.00
29.	बच्चों के मित्र - जे. कृष्णमूर्ति	रु. 12.00
30.	शिक्षा क्या है?	रु. 175.00
31.	ईश्वर क्या है?	रु. 125.00
32.	ध्यान (परिवर्द्धित संस्करण)	रु. 125.00
33.	आपको अपने जीवन में क्या करना है	रु. 175.00
34.	परिसंवाद (त्रैमासिक, प्रति अंक)	रु. 20.00